



पशुधन संकल्प

e - Magazine

Available online at
<https://psem.vitalbiotech.org>

Article ID: PS/26/01

लंपी स्किन डिजीज



डॉ. चन्दन कुमार, डॉ. चारु सिंह, डॉ. कुमारी आरती
 वेटेरिनरी कॉलेज मथुरा

परिचय

भारत में लंपी स्किन डिजीज रोग के मामले लगातार बढ़ते जा रहे हैं ये रोग एक वायरस के चलते मवेशियों में फैल रहा है। जिसे गांठदार त्वचा रोग वायरस कहा जाता है। इसकी तीन प्रजातियां हैं। जिसमें पहली प्रजाति कैप्रिपॉक्स वायरस है। इसके अन्य गोटपॉक्स वायरस और शीपपॉक्स वायरस हैं। 20 वीं पशुगणना में गोधन (गाय-बैल) की आबादी 18 करोड़ है जबकि भैंसों की आबादी 11 करोड़ है। जो कि दुनिया में पहले नंबर पर है। देश की एक बड़ी आबादी पशुपालन से जुड़ी है ऐसी बीमारी से पशुपालकों को काफी नुकसान उठाना पड़ सकता है।

लंपी स्किन डिजीज के लक्षण

इस रोग के कई लक्षण हैं। जिसमें बुखार वजन कम होना लार निकलना आंख और नाक का बहना दूध का कम होना शरीर पर अलग-अलग तरह के नोड्यूल दिखाई देना शामिल है। इसके साथ ही इस रोग में शरीर में गांठें भी बन जाती हैं। साथ ही ये भी देखने को मिला है कि इससे मादा मवेशियों को बांझपन गर्भपात निमोनिया और लंगड़ापन झेलना पड़ जाता है। ये एक तरह का वायरस है जिसका कोई ठोस उपाय नहीं है।



लेख इतिहास

Received : 16. 08.2026
 Revised : 22. 08.2026
 Accepted : 28. 08.2026



अनुरूपी लेखक

डॉ. चन्दन कुमार *
 E-mail ID:
vetchandan@gmail.com



Open Access

This article is published under the terms of the
[Creative Commons Attribution License 4.0.](#)

ऐसे में पशुओं को इससे प्रभावित क्षेत्रों में जाने से रोकना होगा। वहीं रोग से बचने के लिए एंटीबायोटिक्स, एंटी इंप्लेमेंटरी और एंटीहिस्टामिनिक दवाएं दी जाती हैं। साथ ही बीमार पशुओं के शरीर पर उभरे चकत्तों पर नीम हल्दी का लेप बना कर लगायें



जानिए कैसे फैलती है बीमारी

बताया जा रहा है कि लंपी त्वचा रोग एक ऐसी बीमारी है जो मच्छरों मक्खियों जूं एवं ततैयों की वजह से फैल रही है। इसके साथ ही ये मवेशियों के सीधे संपर्क में आने और दूषित भोजन एवं पानी के जरिए भी फैलती है।

मक्खी-मच्छरों के कारण एक से दूसरे पशु में फैल रहा

वायरस फैलने का बड़ा कारण मक्खियां व मच्छर हैं। इन्हीं के कारण लंपी बीमारी एक से दूसरे पशु में फैल रही है। क्योंकि जब किसी पशु में वायरस फैल जाता है तो पहले उसकी स्किन पर नर्म गांठें बन जाती हैं। पूरे शरीर पर गांठें हो जाती हैं। ये गांठें धीरे-धीरे फूटने लगती हैं। इनसे सफेद पानी रिसने लगता है। फिर इन्हीं घावों पर मक्खी और मच्छर बैठने लगते हैं। ये मक्खी-मच्छर दूसरे पशु पर भी बैठते हैं और वो भी इन्फेक्ट हो जाता है।

अभी तक की स्टडी में लंपी वायरस से बीमार पशु का दूध पीने से इंसान पर असर का मामला सामने नहीं आया है। इसका बड़ा कारण

है कि हम दूध को गर्म करके ही पीते हैं। गर्म करने पर दूध में मौजूद बैक्टीरिया व वायरस नष्ट हो जाते हैं। साथ ही ह्यूमन बॉडी में एक ऐसा एसिड होता है, जोकि खुद ही ऐसे वायरस को खत्म कर देता है। हालांकि बीमार पशु का दूध पीने पर बछड़े जरूर संक्रमित हो सकते हैं।

संक्रमण से बचाव के उपाय बताया

- लम्पी के संक्रमण से पशुओं को बचाने के लिए अपने जानवरों को संक्रमित पशुओं से अलग रखना चाहिए।
- अगर गोशाला या उसके नजदीक किसी पशु में संक्रमण की जानकारी मिलती है तो स्वस्थ पशु को हमेशा उनसे अलग रखना चाहिए।
- रोग के लक्षण दिखने वाले पशुओं को नहीं खरीदना चाहिए। मेला, मंडी और प्रदर्शनी में पशुओं को नहीं ले जाना चाहिए।
- गोशाला में कीटों की संख्या पर काबू करने के उपाय करने चाहिए।
- मुख्य रूप से मच्छर मक्खी पिस्सू और चिंचडी का उचित प्रबंध करना चाहिए।
- रोगी पशुओं की जांच और इलाज में उपयोग हुए सामान को खुले में नहीं फेंकना चाहिए।
- अगर गोशाला या उसके आसपास किसी असाधारण लक्षण वाले पशु को देखते हैं तो तुरंत नजदीकी पशु अस्पताल में इसकी जानकारी देनी चाहिए।
- एक पशुशाला के श्रमिक को दूसरे पशुशाला में नहीं जाना चाहिए
- पशुपालकों को भी अपने शरीर की साफ-सफाई पर भी ध्यान देना चाहिए।

एलएसडी की संक्रामक प्रकृति और अर्थव्यवस्था पर इसके बुरे प्रभाव जैसे दूध उत्पादन में कमी गर्भपात और बांझपन आदि को देखते हुए वर्ल्ड ऑर्गेनाइजेशन फॉर एनीमल हेल्थ (ओआईई) ने इसे नोटीफाएबल डिजीज (कानूनन सरकारी अधिकारियों तक इसकी

रिपोर्ट करना) घोषित किया है। इसका मतलब है कि किसी देश को रोग के किसी भी प्रकोप के बारे में ओआईडी को सूचित करना होगा ताकि उसके प्रसार को रोका जा सके।

लम्पी त्वचा रोग का उपचार:

चूंकि यह वायरल संक्रमण है इसलिए इसका कोई इलाज नहीं है, लेकिन द्वितीयक जीवाणु संक्रमण से बचने के लिए एंटीबायोटिक्स एंटी इंप्लेमेंटरी और एंटीहिस्टामिनिक दवाएं दी जाती हैं।

त्वचा के घावों को 2 प्रतिशत सोडियम हाइड्रॉक्साइड 4 प्रतिशत सोडियम कार्बोनेट और 2 प्रतिशत फॉर्मेलिन द्वारा एंटीसेप्टिक समाधान के साथ इलाज किया जा सकता है। एस्कॉर्बिक एसिड 10 प्रतिशत को सर्वश्रेष्ठ के रूप में रेट किया गया है लेकिन समस्या यह है कि जलीय एस्कॉर्बिक एसिड स्थिर नहीं है इसलिए ताजा तैयार किया जाना चाहिए। वायरस का कोई इलाज नहीं होने के कारण टीकाकरण ही रोकथाम व नियंत्रण का सबसे प्रभावी साधन है। त्वचा में द्वितीयक संक्रमणों का उपचार गैर-स्टेरॉयडल एंटी-इंप्लेमेंटरी और

एंटीबायोटिक दवाओं के साथ किया जा सकता है।

इसके अलावा हम आर्युवेदिक पद्धति जड़ी बूटी द्वारा घरेलू उपचार से भी इस रोग का इलाज करते हैं जैसे कि हल्दी पाउडर एलोवेरा का जेल चूना तथा नीम का छाल और पता तथा नीम का तेल इत्यादि को पेस्ट बनाकर घाव पर या उस तरह की लीजंस पर लगाने से इस समस्या का समाधान जल्दी प्राप्त होता है। हम सुदूर देहात क्षेत्र के पशुपालकों जहां पर आधारभूत सुविधाएं नहीं हैं वहां के पशुपालकों को यह सुझाव देते हैं कि वह अपने पशुओं को नीम छाल तथा नीम पता युक्त पानी को उबालकर उस पानी को छानकर जब पानी ठंडा हो जाता है तो उस पानी में कपड़ा को भीगा कर उस पानी से यदि पशुओं के शरीर को सप्ताह में दो से तीन बार यह प्रक्रिया दोहराई जाती है तो इस तरह के रोग के लक्षण पशुओं में देखने को नहीं मिलते हैं। इस पद्धति के अलावा होम्योपैथी पद्धति द्वारा भी इस रोग का शर्तिया इलाज किया जा सकता है।